'साँप' कविता का भावार्थ लिखें।

उत्तर:- अज्ञेय प्रयोगवाद व तारसप्तक के मूर्धन्य हस्ताक्षर हैं। कहना यह सही होगा कि अज्ञेय बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कलाकार हैं। इनकी कविताओं में क्षणवाद व व्यक्ति-सत्य और आत्मान्वेषण की खोज - पड़ताल ईमानदारी पूर्वक की गई है।

तारसप्तक

आत्मान्वेषण

विवादास्पद

आधुनिक कवियों में सर्वाधिक विवादास्पद कवि अज्ञेय की 'साँप' शीर्षक कविता एक प्रतिनिधि रचना है। प्रस्तुत कविता में तथाकथित महानगरीय-जीवन व समाज में प्रेम, दया, ईमानदारी, सहयोग और सेवा के साथ ही सम्वेदना आदि मानवीय मूल्यों का तीव्र गति से ह्रास हुआ है। निरन्तर मानवीय मूल्य टूट रहे हैं। मनुष्य के भीतर से प्रेम-तत्त्व तिरोहित हो रहा है और अमानवीय मूल्यों को आत्मसात कर अपने जीवन को विषैला बना लिया है। इन्हीं मूल्यों की मर्मस्पर्शी विवेचना कवि ने इस कविता में की है। सर्वप्रथम आधुनिकता का साया - जाल नगर और शहरों पर पड़ा है। सम्प्रति नगरों की प्रवृत्ति व प्रकृति यह हो गई है कि विभाजन और खण्डित जीवन ~~भौतिक साधन~~ -बोध को स्वीकार कर जीना। शहरी जीवन भौतिक साधन और आर्थिक सुविधाओं से सम्पन्न अपने क्षणिक लाभ के लिए दूसरों के प्रति छल-फरेब, कपट-धोखा अन्याय व अपराध कर देना सहज शहरी-जीवन की पहचान हो गई है।

कवि इसी आलोक में साँप को सम्बोधित करते हुए उससे पूछता है कि वह कभी न तो सभ्य कहलाया और न ही सभ्यता का प्रतीक बना। नगरों में उसे रहने का सुअवसर मिला, लेकिन मनुष्यों की काटने या डसने जैसा अमानवीय विषैला कार्य करने की प्रेरणा कहाँ से मिली।

Scanned with CamScanner

बिल्कुल सर्वज्ञात है कि कवि ने आज के तथा कथित वर्तमान शहरी - जीवन में हुए मानवीय मूल्यों के चतुर्दिक पतन के कारण ही सर्वत्र विषैलापन महसूस है। प्रकृति से साँप विषैला होता है, वह साँप चाहे गाँव का हो या शहर का या जंगल का कवि की मान्यता है कि वर्तमान में सभ्यता और विकास का निकष शहर है। लेकिन शहरों की सभ्यता एक - दूसरे के प्रति घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, वैर, धोखा, छल, प्रपंच ही अधिक विक-सित हुई है। कवि इन्हीं अमानवीय मूल्यों को व्यंजना - शैली में उरेहा है। कवि की आत्मस्वीकृति है कि इन दुर्गणों के विष का ही विकास हुआ है। ये शहर के सभ्य व विकसित कहे जानेवाले लोग ही साँप हैं। इनके विष के समक्ष वास्तविक साँप का विष भी कम पड़ गया है। यानी शहर के लोग साँप से भी अधिक विषैले हो गये हैं।

साँप आज के तथा कथित महानगर में जीने वाले सभ्य मनुष्य का प्रतीक है। यह कविता छंद मुक्त है। कवि ने तथाकथित आधुनिक जीवन के एक विकृत और सारहीन मूल्यों को बेबाकी से उठाया है। आधुनिक सभ्यता के मोह - जाल में शहरी जीवन से प्रेम, भाईचारा, परस्पर विश्वास, सहयोग व सेवा आदि पारम्परिक मूल्यों की रक्षा करने में शहर विफल रहा है। शहरों ने इंसान को तन्हाई व अपेक्षा ही नहीं, असुरक्षित के साथ ही भीषण भय में जीने को विवश कर दिया है। जंगलों में रहनेवाले साँपों से मनुष्य को कम खतरा है, बल्कि मनुष्य ही मनुष्य के लिए उस साँप से अधिक विषैला और खतरनाक है इन्हीं जीवन बोधों को कवि ने अपनी प्रस्तुत कविता 'साँप' में बहुत ही मार्मिक ढंग से उरेहा है।